दिनांक 05 दिसम्बर, 2009 को आयोजित लखनऊ महोत्सव के समापन समारोह हेतु महामहिम श्री राज्यपाल का उद्‌बोधन।

देवियों और सज्जनों,

आज यहाँ आयोजित लखनऊ महोत्सव के समापन समारोह में आप लोगों के बीच आकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है।

प्रदेश की राजधानी लखनऊ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से सदैव अत्यन्त महत्वपूर्ण शहर रहा है। संस्कृति और इतिहास दोनों के ही दृष्टिकोण से अत्यन्त समृद्धि अदब और तहजीब का शहर लखनऊ अपने हृदय में रूमी दरवाजा, जामा मस्जिद, रेजीडेन्सी, छोटा और बड़ा इमामबाड़ा, छत्तर मंजिल, ला–मॉटीनियर आदि जैसे ऐतिहासिक धरोहर तथा विरासत को समेटे हुए है।

लखनऊ के लिये किसी शायर ने कहा है कि–

लखनऊ है तो महज़ गुम्बद–ओ मीनार नहीं,
सिर्फ एक शहर नहीं कूचा–ओ बाज़ार नहीं।
इसके आँचल में मुहब्बत के फूल खिलते हैं,
इसकी गलियों में फरिश्तों के पते मिलते हैं।

लखनऊ शहर को गंगा–जमुनी तहजीब का केन्द्र कहा जाता है। जो भी लखनऊ आता है, वह लखनऊ का हो जाता है। ''पहले आप'' की तहजीब पूरी दूनिया में मशहूर है। साम्प्रदायिक सौहार्द की यह नगरी अनेक विश्व–विख्यात महानुभावों की

कर्म–स्थली रही है। चाहे वह मीर तकी मीर हो या वृजनारायण चकबस्त, मजाज़ या ''उमराव जान'' के लेखक मिर्जा हादी रूसवा हों सबने लखनऊ को आगे बढ़ाने का काम किया है। मुझे विश्वास है कि यहाँ से निकला चैन व अमन का सन्देश पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने में सहायक होगा।

लखनऊ अपनी इन्हीं विरासत के लिये पूरे भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में विख्यात है। कथक नृत्य, शेरो–शायरी, ग़ज़ल

और कव्वाली आदि पुराने–जमाने से ही इस शहर की सांस्कृतिक परम्परा से जुड़े रहे हैं।

मुझे खुशी है कि इस महोत्सव में प्रदेश एवं अवध की सांस्कृतिक विद्याओं की तस्वीर प्रस्तुत की गई है। शिल्प मेले के माध्यम से प्रदेश की हस्त कलाओं का और विभिन्न स्थलों पर यहॉ के स्वादिष्ट व्यंजनों का भी लोगों ने आनन्द लिया है।

किसी समाज में संस्कृति किसी एक उपादान से नहीं बनती बल्कि समाज की प्रत्येक इकाई मिलकर संस्कृति का निर्माण करती

है। लोक व्यवहार, रीति–रिवाज, तीज–त्यौहार और लोक शिल्प सभी एकत्रित स्वरूप में संस्कृति का निर्धारण करते हैं। महोत्सव जैसे आयोजन स्थानीय संस्कृति से परिचित कराने के साथ ही संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्द्धन में लगे लोगों को उत्साह भी प्रदान करते हैं।

लखनऊ महोत्सव के माध्यम से यहाँ की सांस्कृतिक परम्परा के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द के मूल्यों को

स्थापित करने का भी प्रयास किया जाता है, जो सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

हमारा देश भारत विभिन्न धर्मो, संस्कृतियों और परम्पराओं का देश है। यहाँ प्राचीन काल से ही अनेक धर्मावलम्बी धार्मिक एवं वैचारिक विभेदों के बावजूद आपस में मिलजुल कर प्रेम एवं स्नेह के साथ शांतिपूर्वक रहते आये हैं। हमारे देश में प्रचलित लोक परम्पराओं और लोक कलाओं से पारस्परिक प्रेम और आपसी भाईचारे को बढ़ावा मिलता रहा है।

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि लखनऊ महोत्सव में पहली बार लोगों को वायु सेना और थल सेना को भी देखने का अवसर मिला। यह बहुत अच्छी बात है। मैं चाहूँगा कि देश को स्वाधीन कराने वाले अमर शहीदों, प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों तथा मातृ भूमि की रक्षा में देश की सीमाओं पर शहीद हुए वीर सैनिकों के शौर्य एवं पराक्रम का भी इस प्रकार के महोत्सव में प्रदर्शन किया जाना चाहिये। इससे हमारे बच्चों को उनके बारे में जानने और समझने का अवसर मिलेगा।

यह भी खुशी की बात है कि इस बार यहाँ खेती–बाड़ी के पण्डाल लगाये गये हैं, जिसे ''आदर्श ग्राम'' का स्वरूप दिया गया है। इसमें स्वयं सहायता समूहों के उत्पादों का प्रदर्शन और ऊर्जा संरक्षण–संवर्धन से जुड़ी जानकारी दी गई।

इस प्रकार का कोई भी आयोजन तभी पूर्णतया सफल हो सकता है, जब वहाँ के स्थानीय नागरिक ऐसे आयोजनों में पूरे उत्साह के साथ अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें और वे कदम–कदम पर आयोजकों के साथ सहयोग करें। अगले साल

लखनऊ महोत्सव अपने नये सज–धज एवं नये कलेवर के साथ आपके समक्ष फिर प्रस्तुत हो। इसी कामना के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद–नमस्कार।